Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

BA Part II (H)
Paper III

जाति व्यवस्था → Lecture II (परिभाषाएं)

जाति व्यवस्था के अंतर्गत जाति की प्रकृति को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है।

एस० वी० केतकर (History of Caste in India) के अनुसार, "जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसकी सदस्यता उन्हीं लोगों को मिलती है जिन्होंने उसी समूह में जन्म लिया है तथा जिसके सदस्यों पर एक दृढ़ सामाजिक नियम के द्वारा अपने समूह से बाहर विवाह करने पर नियन्त्रण लगा दिया जाता है"। इस आधार पर केतकर ने लिखा है कि अन्तर्विवाह ही जाति व्यवस्था का सार तत्व है।

मजूमदार तथा मदान के अनुसार (An Introduction to Social Anthropology), "जाति एक बन्द वर्ग है।" अर्थात किसी जाति के सदस्यों की सामाजिक आर्थिक स्थिति स्पष्ट होती तथा समान होती है,

2020-7-9 17:27

साथ ही उन्हें अपनी स्थिति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन की अनुमति नहीं होती ।

चार्ल्स कूले (Social organisation) के अनुसार "जब एक वर्ग पूर्णतया आनुवंशिक पर आधारित होता है, तब हम उसे जाति कहते हैं।" अर्थात जब एक वर्ग की सदस्यता जन्म पर आधारित हो जाती है, तब यही वर्ग एक जाति के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

सेनार्ट के अनुसार "जाति व्यवस्था का तात्पर्य उस व्यवस्था से है जिसमें कोई समाज स्वयं में पूर्ण अनेक पृथक इकाइयों में विभाजित होता है तथा इन सभी इकाइयों के पारस्परिक सम्बन्ध उच्चता और निम्नता के क्रम में धार्मिक आधार पर निर्धारित होते हैं।

मार्टिन्डेल के अनुसार " जाति व्यवस्था एक आनुवंशिक अन्तर्विवाही और व्यावसायिक समूह की ओर संकेत करती है। इसमें अनेक कर्मकाण्डों और विश्वासों के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की किसी भी तरह के परिवर्तन पर नियन्त्रण लगा दिया जाता है।"

मैक्स वेबर के अनुसार ," जाति एक बन्द प्रस्थिति समूह है।"

इन परिभाषाओं के आधार पर जाति व्यवस्था को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

2020-7-9 17:27